



'RESEARCH JOURNEY' *International E- Research Journal*  
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)  
Issue 164 - Mahatma Gandhi's Thoughts & Its Present Relevance  
UGC Approved Journal

ISSN :  
2348-7143  
March-2019

Impact Factor - 6.261

ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S  
**RESEARCH JOURNEY**

International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

March -2019 Special Issue - 164

**Mahatma Gandhi's Thoughts & Its Present Relevance**

Guest Editor:

Dr. C. J. Khillare

Principal

Rayat Shikshan Sanstha's

Rajarshi Chhatrapati Shahu College,  
Kolhapur, Dist. Kolhapur.

Executive Editor of the issue:

Mr. S. M. Mahajan

Dr. Mrs. M. B. Desai

Mrs. M. K. Kannade

Dr. Mrs. B. S. Puntambekar

Dr. M. M. Bandhare

Mr. S.A. Jadhav

Mr. V.K. Akhade

Miss. Dr. S. R. Kulkarni

Miss. A. V. Jadhav

Mr. B. B. Ghurke

Chief Editor:

Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)

**SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS**

For Details Visit To : [www.researchjourney.net](http://www.researchjourney.net)

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 800/-

Published by -

© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik

Email : [swatidhanrajs@gmail.com](mailto:swatidhanrajs@gmail.com) Website : [www.researchjourney.net](http://www.researchjourney.net) Mobile : 9665398258



## INDEX

| No. | Title of the Paper  | Author's Name                             | Page No. |
|-----|---|---|----------|
| 1   | Gandhi Ethical Philosophy for Humanity (A Critical Study)   | Tejram Pal                                | 12       |
| 2   | Relevance of Gandhian Principles of Management and Leadership - Socio-Economic and Political View | Suvarna Kumathekar & Dr.Machhindra Sakate | 18       |
| 3   | Relevance of the Philosophy of Mahatma Gandhi   | Mr. Mahadev Sontakke                      | 23       |
| 4   | Gandhi's Reflections on Everyday Life in India  | Mr. Ganesh Narkulwad                      | 26       |
| 5   | Environmentalism : A Gandhian Perspective   | Ketan Bhosale                             | 31       |
| 6   | An Economic Approaches of Mahatma Gandhi  | Reshma Shirgave                           | 35       |
| 7   | Perception of Khadi among College going Student's in Kolhapur                                     | Mr. Kuldeep Ghorapade, Dr. C. S. Kale     | 39       |
| 8   | Economic Thoughts of Mahatma Gandhi: An Overview  | Mr. Ashish Bhasme                         | 43       |
| 9   | Revisiting the 'Mahatma' through Richard Attenborough's 'Gandhi'                                  | Dr. Sanjay Sathe                          | 46       |
| 10  | Gandhi's View on Cleanliness and Swach Bharat Abhiyan and Its Present Status                      | Dr. Bhagyashree Puntambekar               | 49       |
| 11  | Nonviolence: The Weapon of Gandhiji   | Mrs. Komal Oswal                          | 54       |
| 12  | Clean India Mission and Mahatma Gandhi : With Special Reference to Maharashtra                    | Prof. Valmik Garje                        | 57       |
| 13  | Gandhiji's Gram Vikas and Swadeshi Movement through Food Processing Industry in India             | Dr. Smt. Anagha Pathak                    | 62       |
| 14  | Mahatma Gandhi's Thoughts on Women Empowerment and Its Present Relevance                          | Nazir Pathan & Dr. N. S. Dongare          | 67       |
| 15  | Mahatma Gandhi's Decentralization Policy in Today's Scenario                                      | Mrs. Priyanka Suyog Patil                 | 71       |
| 16  | भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस मधील महात्मा गांधींच्या नेतृत्वाचा उदय - एक चिकित्सक अभ्यास             | प्रा. संदिप महाजन                         | 74       |
| 17  | गांधीवाद के प्रमुख आयाम - सत्य और अहिंसा  | डॉ.सरोज पाटील                             | 79       |
| 18  | राहुल सांकृत्यायन के कथा साहित्य में गांधीवादी चेतना  | डॉ.रविंद्र पाटील                          | 82       |
| 19  | महात्मा गांधी और अहिंसा   | प्रा.अजित लिपारे                          | 84       |
| 20  | महात्मा गांधीजींच्या विचारातून, चळवळीतून घडलेली भारतीय स्त्री                                     | रीना कांबळे                               | 86       |
| 21  | महात्मा गांधीजीची ग्रामविकास संकल्पना   | प्रा.बी.आर.नदाफ                           | 89       |
| 22  | एकविसाव्या शतकातील सर्वात मोठी भेट - महात्मा गांधी  | प्रा.प्रविण डांगे                         | 93       |
| 23  | महात्मा गांधी यांचे सर्वोदय, स्वयंपूर्ण खेडं याविषयीचे विचार                                      | डॉ.के.डी.पाटील                            | 96       |
| 24  | महात्मा गांधीजींचे विज्ञानवादी विचार  | मिलिंद पाटील व समाधान जाधव                | 100      |
| 25  | सत्य व अहिंसा : महात्मा गांधीजींच्या शिकवणुकीचे मुख्य आधारस्तंभ                                   | श्री.डी.एन.महाडिक व श्री.व्ही.के.जाधव     | 103      |
| 26  | महात्मा गांधीजींचा आर्थिक दृष्टिकोन   | डॉ.एम.बी.चौगुले                           | 110      |
| 27  | महात्मा गांधीजींच्या ग्रामीण विकासाच्या तत्वज्ञानाची सद्यस्थितीतील उपयुक्तता                      | सुकेशिनी जोगदंड                           | 116      |
| 28  | महात्मा गांधींच्या चळवळीतील वीरांगना अरुणा असफ अली  | डॉ. सिंधू आवळे                            | 122      |
| 29  | शोधनिबंधाचे नाव-महात्मा गांधींना अभिप्रेत असणारा स्वच्छता विषयक वैयक्तिक दृष्टिकोन                | श्री.अजितकुमार पाटील                      | 125      |



|    |  |   |     |
|----|--|---|-----|
| 30 | महात्मा गांधीचे सत्य व अहिंसा संघर्षाचे विचार                                  | प्रा. ममता कन्नोडे  | 133 |
| 31 | महात्मा गांधी यांचे आर्थिक विचार   | श्री. दत्तात्रय वाघमारे                                     | 137 |
| 32 | महात्मा गांधीजींची संगीत विषयक भूमिका  | डॉ. माधुरी खोत  | 143 |
| 33 | महात्मा गांधी यांच्या नेतृत्वाखाली स्वातंत्र्य चळवळीत महिमांचे योगदान          | डॉ. प्रकाश पाटील  | 147 |
| 34 | महात्मा गांधींच्या आंदोलनातील स्त्रियांचा सहभाग                                | डॉ. एस.एस. संघराज   | 151 |
| 35 | सातारा जिल्ह्याचा असहकार आंदोलनातील सहभाग                                      | प्रा. एस.जी. निकम   | 154 |
| 36 | महात्मा गांधीजींच्या आर्थिक विचाराची प्रासंगिकता                               | प्रा. जी.एस. वनसोडे, प्रा. ए. वी. मुळीक                     | 158 |
| 37 | गांधीवाद आणि मराठी कादंबरी व कविता   | डॉ. संगीता खुरद   | 161 |
| 38 | वर्तमान युगात महात्मा गांधींच्या नैतिक विचारांचे महत्त्व                       | कु. स्वाती भोगळे  | 169 |
| 39 | महात्मा गांधींचे आर्थिक विचार व समकालीन उपयुक्तता                              | प्रा. मधुरा देसाई   | 172 |
| 40 | महात्मा गांधी आणि स्त्रीविचार  | डॉ. पद्माकर सर्जीराव  | 176 |
| 41 | महात्मा गांधी : सत्य व अहिंसेचे महामेरू  | मीनाक्षी मिनचे  | 179 |
| 42 | महात्मा गांधींचे सत्य व अहिंसात्मक विचार व आजची तरुणाई                         | डॉ. तेजश्री रायते   | 185 |
| 43 | गांधी विचारांची मूलतत्त्वे : सत्य आणि अहिंसा                                   | श्री. विलास देऊलकर  | 186 |
| 44 | महात्मा गांधीजींचा स्त्री विषयक दृष्टीकोन आणि आजची स्थिती                      | श्रीमती. संध्या माने  | 192 |
| 45 | महात्मा गांधीजींचे धार्मिक विचार काळाची गरज                                    | डॉ. नंदिनी रणखांबे  | 196 |
| 46 | महात्मा गांधी यांच्या विचारातील अहिंसा तत्त्वाची मूल्यात्मकता                  | डॉ. सुनीता कांबळे   | 200 |
| 47 | महात्मा गांधी : सामाजिक विचार  | श्री. प्रदिप होडावडेकर                                      | 205 |
| 48 | गांधीजींचे पंचायत राज संबंधी विचार   | प्रा. आर्या जाधव  | 210 |
| 49 | महात्मा गांधीजींचे अर्थशास्त्रीय विचार   | डॉ. शर्वरी कुलकर्णी   | 213 |
| 50 | गांधी विचारांच्या पाईक कस्तुरवा  | डॉ. सुप्रिया खोले   | 217 |
| 51 | महात्मा गांधीजींची स्त्री व हरिजन चळवळीतील भूमिका                              | महेश लोहार  | 220 |
| 52 | महात्मा गांधींचे अहिंसा तत्त्वज्ञान : एक ऐतिहासिक अभ्यास                       | प्रा. विनोद सोनवणे  | 226 |
| 53 | महात्मा गांधीजींच्या पर्यावरण व निसर्गविषयक विचारांची आजच्या काळातील उपयुक्तता | श्री. बी. बी. घुरके, श्री. पी. एस. चौगुले व डॉ. एम. डी. कदम | 231 |
| 54 | म. गांधींच्या नेतृत्वाखालील स्वातंत्र्य लढ्यातील प्रभावी अस्त्र - 'चरखा'       | हर्षदा कांबळे   | 234 |
| 55 | महात्मा गांधीजींचे शिक्षणविषयक तत्त्वज्ञानाचे सद्यकालीन औचित्य                 | सोमनाथ हुबाले   | 238 |
| 56 | महात्मा गांधीजींच्या पर्यावरणावादी विचारांचे सद्यकालीन औचित्य                  | नागेश महाडीक  | 243 |
| 57 | महात्मा गांधीजींचा स्वातंत्र्य चळवळीतील स्त्रियांची भूमिका                     | कु. वनिता कुंभार  | 247 |
| 58 | महात्मा गांधींच्या संकल्पनेतील ग्रामस्वराज्य एक अभ्यास                         | डॉ. व्ही. व्ही. पाडळकर                                      | 250 |
| 59 | महात्मा गांधीजींचा स्वातंत्र्य चळवळीत स्त्रियांची भूमिका                       | श्री. दत्तात्रेय भोये                                       | 257 |
| 60 | महात्मा गांधी यांचे आर्थिक विचार व त्यांची सद्यस्थितीतील उपयुक्तता             | अस्लम अत्तार  | 263 |
| 61 | महात्मा गांधींच्या स्वराज्यविषयक विचारांचे विश्लेषणात्मक अध्ययन                | प्रा. ईश्वर वाघ   | 268 |
| 62 | 'सर्वोदय' : पर्यायी विकासाचा आकृतिबंध  | संदीप तुंडूरवार   | 273 |
| 63 | मनोजय व विकारांचा संयम : महात्मा गांधी   | प्रा. वाय. ए. आवळे  | 278 |

Our Editors have reviewed paper with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher. - Chief & Executive Editor



महात्मा गांधीच्या स्वराज्यविषयकविचारांचे विश्लेषणात्मक अध्ययन

प्रा. ईश्वर जणार्थन वाघ  
(अर्थशास्त्र विभाग )

कॉलेज :- श्रीमती राजकमल बाबूराव तिडके महाविद्यालय मौदा  
मो. ८८०६६८५८५०/७४४८०८१२९३  
ishwarwagh714@gmail.com

सारांश

ग्रामीण समाजाच्या विकासाच्या दृष्टिकोनातून राष्ट्रपिता महात्मा गांधीच्या विचारांना अत्यंत महत्वाचे स्थान आहे. " वसुधैव कुटुंबकम् " आणि " कणवन्तो विश्व आर्यम् " म्हणून ओळखल्या जाणाऱ्या देशात जातीयता, नक्षलवाद, आतंकवाद, वैचारिक संघर्ष सांस्कृतिक मुल्याचा न्हास यासारख्या ज्वलंत समस्या निर्माण झाल्या. त्यावर मात देण्यासाठी म.गांधींनी पूर्ण स्वराज्याची संकल्पना मांडली. ज्या राज्यात जनतेच्या आशा-आकांक्षांचा विचार होतो, आदर्श मानवाची कल्पना साकार होते असा समाज निर्माण करण्याचे स्वप्न महात्मा गांधींचे होते. हिंद स्वराज्याची निर्मिती केवळ इज्राजपासून सूरका मिळावी या उद्देशाने नसून देशामध्ये रामराज्य निर्माण करणे हा आहे. यामध्ये महात्मा गांधींना पशुबळापेक्षा आत्मबळावर जास्त विश्वास असल्याचे दिसून येते, त्यांच्या मते जगातील सर्व समस्यांचे मुळ शहरीकरणांमध्ये सापडते. वाढते शहरीकरण व यात्रिकीकरण देशाला विनाशाकडे घेऊन जाईल, त्यामुळे ग्रामीण खेड्याचा सर्वांगीण दृष्टीकोनातून विकास करणे गरजेचे आहे. शेती, कपडा व मकान या गरजांची पूर्तता व निर्मल समाज निर्माण करण्याचे स्वप्न पूर्ण करण्यासाठी पूर्ण स्वराज्य उदयास येणे आवश्यक आहे. त्यासाठी आर्थिक विकेंद्रीकरण, पंचायत राज व्यवस्था, सर्व धर्म समभाव, सहयोगता, संरक्षकता, स्वावलंबन, मानवी श्रम, स्वदेशी वस्तू वापर या सर्व गोष्टी ग्रामीण समाजात निर्माण व्हायला पाहिजे. तात्पर्य समाजानी आणि निर्मल भारत निर्माण करण्यासाठी पूर्ण स्वराज्य निर्माण करणे अत्यंत आवश्यक आहे हे महात्मा गांधींच्या विचारांचे सार आहे.

प्रस्तावना:-

वर्तमान व्यवस्थेमध्ये महात्मा गांधींच्या विचारांना अत्यंत महत्वाचे स्थान आहे. कारण ज्या देशामध्ये अनादी काळापासून विरता आणि शूरता याचा इतिहास लिहिला गेला आहे तोच देश सर्वात जास्त काळापर्यंत गुलाम राहिला आहे भारत देश " वसुधैव कुटुंबकम् " आणि " कणवन्तो विश्व आर्यम् " म्हणून ओळखला जायचा तोच आता छोट्या छोट्या राज्यामध्ये विभाजीत झाला याचे कारण म्हणजे स्वराज्यया संकल्पनेचा मुळ यथार्थ न घेता केंद्रसत्ता, राज्यसत्ताव स्थानिक सत्ता कार्य करित आहे, त्यामुळे देशामध्ये जातीयता, नक्षलवाद ,आतंकवाद, वैचारिक संघर्ष सांस्कृतिक मुल्याचा न्हास यासारख्या अनेक ज्वलंत समस्या निर्माण झाल्या आहे. अशा परिस्थितीत गांधीजींचा स्वराज्यविषयक विचारांना जाणून घेण्याची गरज निर्माण झाली आहे. स्वराज्य हा शब्द उग्रवादी काळापासून जास्त प्रचलित झाल्याचे दिसून येते. यामध्ये बाळ गंगाधर टिळक यांनी " स्वराज्य माझा जन्मसिद्ध अधिकार आहे व तो मी मिळविणारच " अशी घोषणा केली होती, यानंतर म. गांधींनी सर्वप्रथम १९२० मध्ये स्वराज्याची मागणी केली, यामागे ससंदीय लोकशाहिची संकल्पना रुजविणे हा उद्देश होता, त्यांच्या मते ज्या राज्यात लोकांच्या गरजा आणि आकांक्षांची पूर्तता केली जाईल अशी व्यवस्था निर्माण करणे हा स्वराज्य या संकल्पनेमागचा हेतू होता.



महात्मा गांधींच्या मते स्वराज्य या संकल्पनेला व्यापक महत्त्व होते. त्यांच्या मते स्वराज्य निर्माण होण्यासाठी राजकीय, सामाजिक, आर्थिक,सांस्कृतिक आणि वैचारिक स्वातंत्र्य मिळणे अत्यंत आवश्यक आहे. तसेच समाजामध्ये नैतिक मुल्यांची जोपासना करणेमुळे अत्यंत महत्त्वाचे आहे. त्यांनी स्वराज्याचा अर्थ स्वतंत्रता जण कल्याणाचा सर्वांत उंच शिखरावर ठेवले आहे. स्वराज्य म्हणजे 'निर्धनाचे राज्य' असावे असा महात्मा गांधींच्या व्यापक दृष्टीकोन होता तातपर्यंत एक उत्तम, समाधानी, आदर्श, पारदर्शक, अहिंसात्मक व सत्यप्रिय समाजाची निर्मिती ज्या राज्यामध्ये होते तेथे स्वराज्याची संकल्पना उदयास येते -आधुनिक काळात या सर्व गोष्टीकडे डोळेझाक केल्यामुळे महात्मा गांधींच्या स्वराज्यविषयक विचारावर मधून करण्याची गरज आहे.

#### शोधनिबंधाची उद्दिष्टे:-

प्रस्तुत शोधनिबंध खालील उद्दिष्टे समोर ठेऊन पूर्ण केलेला आहे.

1. स्वराज्य या संकल्पनेतील मतितार्थ जाणून घेणे.
2. महात्मा गांधींच्या हिंद-स्वराज्य संकल्पनेमागची भूमिका जाणून घेणे.
3. महात्मा गांधींच्या ग्राम- स्वराज्य संकल्पनेमागची भूमिका विश्लेषित करणे
4. महात्मा गांधींच्या स्वराज्यविषयक विचाराची आपल्या काळातील प्रासंगिक गरज जाणून घेणे.
5. सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आणि वैचारिक दृष्टीकोनातून स्वराज्य संकल्पनेचे विश्लेषण करणे

#### संशोधन पध्दती:-

प्रस्तुत शोधनिबंध मांडताना प्रामुख्याने ऐतिहासिक व वर्णनात्मकसंशोधन पध्दतीचा वापर केलेला आहे वत्या आधारावर महात्मा गांधींच्या विचारांचे विश्लेषणात्मक अध्ययन केले आहे

#### महात्मा गांधींच्या विचारातील स्वराज्याचा अर्थ :-

महात्मा गांधींच्या स्वराज्याची संकल्पना अत्यंत व्यापक स्वरूपाची होती. त्यांच्या मते केवळ विदेशी सत्तेपासून स्वातंत्र्य मिळविणे म्हणजे स्वराज्य नाही तर ज्यामध्ये सांस्कृतिक मुल्ये, नैतिक मुल्ये,खरी लोकशाही, निर्धनाचे राज्य, आत्मसंयम, खेड्यांच्या विकास, अहिंसात्मक समाज, शोषणरहित व्यवस्था, उत्कृष्ट प्रशासन, स्वशासन आणि जण-कल्याण याचा अंतर्भाव होतो अशी व्यवस्था म्हणजे स्वराज्य होय. याचाच अर्थ म. गांधींना वर्तमान पिढीचा विकास व भावी पिढीचा उत्कर्ष घडवून आणणारे स्वराज्य हवे होते.

#### महात्मा गांधींच्या दृष्टीकोनातील हिन्द स्वराज्य:-

१९०९ मध्ये महात्मा गांधींनी हिन्द स्वराज्याचा आदर्श निर्माण केला. त्यांच्या मते मानसिक आणि वैचारिक सांस्कृतिक आणि जातिविरहीत राज्याची निर्मिती करणे म्हणजे स्वराज्य निर्माण करणे होय. भारतीय संस्कृतीला बळ मिळावे व भारताची विकासाच्या आधारावर पुनरचना व्हावी हा त्यांचा प्रयत्न होता. समाजामध्ये धर्मा-धर्मामध्ये शांतता नांदावी. लोकांमध्ये बलिदानाची भावना निर्माण व्हावी, आध्यात्मिक भावना आणि जिवन संकल्प यामध्ये प्रतिबद्धता निर्माण व्हावी, यासाठी महात्मा गांधी प्रयत्नशील होते. प्राचीन भारतीय शासन व्यवस्थेत संपूर्ण पृथ्वीसाठी एकच शासनव्यवस्था लागू होती. त्यामध्ये कोणत्याही प्रकारची भेदभावाची भावना नव्हती म्हणजे आत्मराज्य हि संकल्पना अस्तित्वात होती. त्यामुळे लोकांना विदेशी किंवा स्वदेशी सरकारपासून सामाजिक, वैचारिक आणि नैतिकदृष्ट्या स्वातंत्र्यमिळेल. स्वराज्याच्या संकल्पनेत कोणत्याही प्रकारचा भेदभावराहणार नाही. शेतकऱ्यांना, मजूरांना, गरिबातल्या गरिबांना पूर्ण स्वातंत्र्य राहिल.



हिंद स्वराजाची निर्मिती केवळ इंग्रजांपासून मुटका मिळायची या उद्देशाने नगून देशामध्ये रामराज्य निर्माण करणे हा आहे. कारण जेव्हा समाजामध्ये एखादा उपद्रव घडून येतो तेव्हा त्याचा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष प्रभाव संपूर्ण समाजावर पडतो. हिंदू-मुसलमान संघर्ष, शिया-सुन्नी संघर्ष, देशातील आतंकवाद, शैत्रवादा, भाषावाद निर्माण होते तेव्हा समाजाची घडी पूर्णपणे विस्कळीत होते यावर एक प्रभावी उपाय म्हणून हिंद स्वराज्य निर्माण करणे आवश्यक होते कारण महात्मा गांधींना पशुवत्त्वापेक्षा आत्मबल श्रेष्ठ असते यावर जास्त विश्वास होता जगातील जनता युद्ध हिंसा दारुगोळा यापासून त्रस्त आहे. त्यामुळे संपूर्ण जग पर्यायी व्यवस्थेचा शोध घेत आहे अशा परिस्थितीत स्वराजाची निर्मिती आणि रचनात्मक कार्यक्रम रावविण्याची नितांत गरज असते. म्हणून १९४१ मध्ये त्यांनी रचनात्मक मार्गदर्शिका लिहिली. त्यांच्या मते रचनात्मक कार्यक्रम पूर्ण स्वराज्य मिळविण्याचे अहिंसात्मक साधन आहे. म्हणून महात्मा गांधींनी खालीलप्रमाणे रामराज्य निर्माण करावयाचे होते.

“ बयरु न कर काद्रू सम कोई । राम प्रताप विपमता खोई ॥

सब नर करहि परस्पर प्रीती । चलही स्वधर्म निरत श्रुतिमिनी

नहि दरिद्र कोऊ दुखी न दिना नही कोऊ अपुध न लच्छन हीना

यासाठी अनवरत प्रयत्न व सतत जागरूकता निर्माण करणे आवश्यक आहे. तात्पर्य महात्मा गांधींना वर्गविहीन समाजरचना निर्माण करावयाची होती.

महात्मा गांधींच्या दृष्टीकोनातील ग्राम स्वराज्य:-

महात्मा गांधींच्या मते जगातील सर्व समस्यांचे मुळ शहरीकरणामध्ये सापडते. त्यांच्या मते शहराची वाढती संख्या ही अत्यंत वाईट आहे. वाढत्या शहरीकरणामुळे खेडी ओस पडत आहे. मोठ्या मोठ्या इमारती कारखाने यामुळे शहरातील वातावरण अमानवीय स्वरूपाचे बनले आहे. जर वेळीच विचार केला नाही तर शहरीकरण व यांत्रिकीकरण देशाला विनाशाकडे घेऊन जाईल. गांधींच्या मते भारत हा गरिब, अंधश्रद्धा, अप्रगतिशील, भुखमरी, हया सर्व समस्यातून ग्रामीण समाजाची मुक्तता करणे हा ग्रामीण स्वराज्याचा अर्थ आहे. ग्रामीण भागात राहणारी वाढती अफाट लोकसंख्या, विशालता, नैसर्गिक वातावरण, शुध्द हवामान हे ग्रामीण भागाला मिळालेली विरासत आहे. ग्रामीण सभ्यता ही देशाच्या भाग्यामध्ये लिहिलेली एक अनमोल बाब आहे. त्यांच्या मते खेड्यांची सेवा करणे, त्यांच्या विकासासाठी ग्रामाणिक प्रयत्न करणे, त्यांना त्यांचे हक्क मिळवून देणे म्हणजे खरे स्वराज्य होय. जर ग्रामीण खेड्यांचा विकास झाला नाही तर देशाचा विनाश अटळ आहे.

म.गांधींच्या मते पूर्ण ग्राम स्वराज्यामध्ये आत्मनिर्भरता दिसून येईल. प्रत्येक व्यक्तियमध्ये शारिरिक व मानसिक जवळीकता निर्माण होईल. कृषीला प्रथम स्थान देऊन त्यावर आधारित ग्रामोद्योगाची निर्मिती होईल. शेती, कापड व मकान यामध्ये स्वयंपूर्ण समाजाची निर्मिती होईल. स्त्री व पुरुष समान भावनेने कार्य करतील. शारिरिक व मानसिकरित्या सुदृढ पिढी निर्माण होऊन एक निर्मल समाजाची उत्पत्ती होईल. अशाप्रकारे एक स्वतंत्र सुदृढ व निर्मल समाज निर्माण करणे हा ग्राम स्वराज्यामागचा गार्धीजीचा उद्देश होता.

ग्राम स्वराज्य व आर्थिक विकेन्दीकरण :-

गांधींचे ग्राम स्वराज्य एक प्रजातांत्रिक समाजवादी राज्य असेल. त्यामुळे त्यांचे मत असे होते की ,

“ सम्पत्ती धारण करने का अर्थ है की ,

भविष्य के लिए पूर्वयोजना बनाना

एक सत्य का खोजी ... कल के लिए

कुछ नही रखता ... संपन्न व्यक्तियों.



के पास वस्तुओं का अतिरिक्त भंडार होता है ,  
जबकि करोड़ों व्यक्ति भरण – पोषण के अभाव में  
भुखे मरते हैं । यदि मनुष्य अपने पास इतना ही रखे ,  
जितना आवश्यक है तो कोई भी अभावग्रस्त नहीं होगा  
तथा सभी संतुष्ट जीवन जी सकेंगे ।

महात्मा गांधीना संतुलीत आहार, निवारा , आवश्यक प्रमाणात कपडे ( खादी ) कुटीर व लघुउद्योगांचा माध्यमातून रोजगार निर्माण केल्यास खरे ग्राम स्वराज्य निर्माण होईल असे वाटत होते. त्यांच्या मते कोणतेही कार्य मानवी कल्याणाच्या दृष्टीकोणातून व्हायला पाहिजे आणि मानवी कल्याण हा समाजाचा सर्वोच्च विंदु असायला पाहिजे.

**ग्राम स्वराज्य व पंचायती राज :-**

गांवाचे प्रशासन चालविण्यासाठी व स्वराज्याची कल्पना साकार करण्यासाठी पाच व्यक्तींची पंचायत तयार केली जाईल, जी ग्रामवासीयांनी निवडलेली असेल. या ग्राम पंचायतांना विधायी , कार्यकारी व न्यायिक अधिकार असेल. प्रत्येक खेडे आपल्या गरजा , सुरक्षा याबाबत स्वयंपूर्ण असेल. कोणत्याही प्रकारची सैनिक – सुरक्षा व्यवस्थेची गरज भासणार नाही. अनेक सामाजिक कार्य , स्वयंसेवी संस्थाद्वारा पार पाडले जाईल. कोणत्याही प्रकारचे आर्थिक , सामाजिक व राजकीय शोषण आढळणार नाही. यालाच महात्मा गांधींनी खरे ग्राम स्वराज्य म्हटले आहे.

**विविधतेत एकता व ग्राम स्वराज्य :-**

महात्मा गांधींच्या मते , जात –पात , धर्म – संप्रदाय , स्त्री-पुरुष , लहान मोठे , गरिब – श्रीमंत याविषयी फरक असला तरी विविधतेत एकता व सर्व धर्म समभावाची भावना अस्तित्वात असेल. सर्व खेड्यांमध्ये सहकार्याची भावना निर्माण होईल. कोणते कार्य करतांना सामाजिक परोपकार , समानता , स्वदेशी यासारख्या तत्वांचे पालन केले जाईल. त्यामुळे आदर्श खेडे निर्माण होऊन खेड्यांचा विकास व उद्धार होईल.

**निष्कर्ष :-**

महात्मा गांधींनी स्वराज्यविषयी काही स्वप्न बघितले होते की , भविष्यातील माझा देश कसा राहील. त्यामध्ये हिंद स्वराज्याची निर्मिती , ग्राम स्वराज्याचा उदय , आर्थिक विकेन्द्रीकरण , अहिंसात्मक समाज व आदर्श विचारधारा यांचा समावेश होता. संपूर्ण ग्रामिण समाजाने राष्ट्रपिता महात्मा गांधींचे समग्र चिंतन , उच्च जीवन दर्शन , गरिबीमुक्त समाजनिर्मितीचे त्यांचे ध्येय आणि त्यांचा आदर्श ठेवून कार्य करणे अपेक्षित होते. यासाठी शासनाने अनेक कार्यक्रमांच्या माध्यमातून त्यांच्या विचारांना प्रसारीत केले असले तरी महात्मा गांधीजींच्या स्वप्नातील स्वराज्यपूर्णपणे निर्माण होऊ शकले नाही. आधुनिक पिढीची विचारधारा व शहरीकरणाकडे असणारा कौल बघता पूर्ण स्वराज्य निर्माण होणे अत्यंत कठीण कार्य आहे. १९ व्या व २० व्या शतकात औद्योगिक, केन्द्रवाद, भोगवाद व युद्धवाद यासारख्या परिस्थितीमुळे पूर्ण स्वराज्याच्या संकल्पनेला अडथळे निर्माण झाले आहे. याचाच अर्थ राष्ट्रपिता महात्मा गांधींच्या स्वराज्यविषयक विचार समजून घेण्याची आधुनिक पिढीला गरज आहे.



संदर्भ सूची

१. सिंह रामजी , गांधी और मानवता का भविष्य, कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स, नई दिल्ली - ११०००२
२. पृष्ठ क्र. ७५, ७६, ८१
३. कुमार, हरिश, गांधी सामाजिक, राजनैतिक परिवर्तन, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली - ११०००२ पृष्ठ क्र. ६३, १०२
४. अग्रवाल, सुनिल कुमार, गांधी और सांप्रदायिक एकता, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली-११०००२ पृष्ठ क्र. १६, २१९
५. सिंह रामजी, गांधी और मानवी विश्वव्यवस्था, कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स, नई दिल्ली -११०००२ पृष्ठ क्र. ३३, १०१
६. योजना जुलै २००७, सप्टेंबर २०१६ , जाने २०१७.

